



# दोस्त की बहन की चुदाने की चाहत

“अपनी चचेरी बहन को चोदने के बाद मेरी कामुक नजर अपने दोस्त की जवान होती बहन पर पड़ी. वो भी मुझे लालसा से देखती थी. मैंने उसे कैसे पटा कर चोदा ? पढ़ें मेरी सेक्स स्टोरी में!...”

**Story By: Ravi khana (ravikhana)**

**Posted: Monday, December 17th, 2018**

**Categories: [जवान लड़की](#)**

**Online version: [दोस्त की बहन की चुदाने की चाहत](#)**

# दोस्त की बहन की चुदाने की चाहत

दोस्तो, मेरा नाम रवि है. जिसने मेरी पिछली कहानी

मेरी पहली चुदाई चाचा की लड़की के साथ

पढ़ी होगी, वो मेरे बारे में सब जानता होगा.

उसके बाद मैं जब भी चाचा के घर जाता तो पहले देख लेता कि घर में कोई है तो नहीं. मैं इस बात की तसल्ली कर लेता कि चाचा चाची खेत गए हैं और कविता के भाई स्कूल गए हैं कि नहीं. मैं उनके घर जाता और उनको आवाज लगाता- चाचा ... चाची ... कोई है? ऐसा मैं इसलिए भी करता ताकि घर में कविता के अलावा कोई और भी न आया हो. जब मेरी आवाज पर जब कविता बोलती कि 'यहां कोई नहीं है, पापा मम्मी खेत गए हैं.' तब मैं बेफिक्र होकर कविता के पास चला जाता. उस वक्त वो या तो रूम में होती या मेरी आवाज सुनकर रूम में आ जाती. मैं उसे उसी बेड पर लिटा कर चोदता, जहां उसको पहली बार चोदा था.

कभी कभी उसकी आवाज नहाते हुए बाथरूम से आती, वो मुझको वहां नंगी मिलती और मैं उसे वहीं दीवार से लगा कर चिपक जाता और बिना समय जाया किए अपना लंड उसकी चूत में पेल देता. लंड के अन्दर जाते ही वो मचल जाती और गांड उठा उठा कर चुदाई का मजा लेने लगती.

कविता के साथ ऐसा लगभग एक साल चला. ये सब तब तक चलता रहा, जब तक मेरा दिल अपने दोस्त की बहन पर ना आ गया.

मेरे बचपन का दोस्त, जो मेरे पड़ोस में ही रहता था. मैं हमेशा उसके साथ रहता और वो मेरे साथ मस्त रहता था. हमारा एक दूसरे के घर आना जाना भी खूब था.

उसकी एक बहन थी ज्योति ... यह उसका बदला हुआ नाम है. ज्योति की मोटी मोटी आँखें थीं, उसकी लंबे बाल थे. वो मुझको अमीषा पटेल की याद दिलाती थी. उसका गदराया हुआ शरीर, गोरा चिट्टा रंग ... कद 5 फुट 5 इंच के करीब, मीडियम साइज के चुचे और गांड बाहर को आती हुई ऐसी मटकती थी कि कितना भी ढीला सलवार सूट पहन ले, तब भी चलते हुए में उसकी गांड साफ दिखती थी.

ज्योति अभी जवान ही हुई थी. वो मुझको बहुत लालसा से देखती रहती थी. मेरी उससे धीरे धीरे सामान्य बातें होने लगीं. मैं उससे उसके भाई के बारे में पूछ लेता कि वो कहां है ? वो भी मुझको अपनी मम्मी के सामने भैया कह कर बात कर लेती थी.

हमारी बातें बढ़ती गईं और जब वो मुझको अकेली मिलती, तो उसके साथ कुछ ज्यादा देर तक बात होने लगी थीं. उसके घर वाले भी खेत चले जाते थे, उस वक्त वो भी घर में अकेली होती थी.

उसकी नजरों को पढ़ कर मैं भी उसके पास जाने के मौके ढूँढने लगा. धीरे धीरे मैं उसको बोलने लगा कि आज तुम बहुत सुंदर लग रही हो ... लाल सूट में तुम बहुत प्यारी लगती हो.

यह सुनकर वो शर्मा जाती.

फिर एक दिन मौके का फायदा उठा कर मैंने कहा- क्या तुम मेरे लिए कल ब्लैक सूट पहनोगी ?

वो शर्मा कर अन्दर चली गई और मैं लंड मसल कर रह गया, जो उसको देख कर ही खड़ा हो जाता था.

मैं अपने घर आ गया.

अगले दिन मैं कॉलेज नहीं गया. वो अकेली थी, उसकी मम्मी और दादी सब लोग खेत गए

थे और भाई पढ़ने गया था ... पापा जॉब पर सुबह ही निकल जाते थे. मैं उसी टाइम अपनी छत पर चढ़ा, जहां से उसका घर साफ दिखता था और घर में घूमती वो भी हमेशा दिखाई दे जाती थी.

कुछ समय इंतज़ार के बाद वो मुझको देखने आई. मैंने देखा कि ज्योति ने आज ब्लैक सूट पहना था. मैंने उसको हाथ हिला कर हैलो बोला उसने भी शर्मा कर उसी अंदाज में जबाव दिया.

फिर मैंने हाथ से इशारा करके पूछा- तेरी मम्मी गई ?

वो इशारे में बोली- हां गई.

मैंने इशारे से पूछा- मैं आ जाऊं वहां ?

तो उसने शर्मा कर हां में सिर हिलाया और अन्दर भाग गई.

मैं जल्दी से उसके घर में आ गया. वो कमरे में मूढ़ा पर बैठ कर बैठी टीवी देख रही थी. वो मुझको देख कर मुस्कुराई, मैं भी मुस्कुराया और उसके पीछे पड़े बेड पर बैठ गया.

मैंने डरते हुए उससे कहा- ज्योति थैंक्स ब्लैक सूट पहनने के लिए.

उसने धीरे से कहा- पहनती क्यों नहीं ... तुमने कहा जो था.

मैंने कहा- सच में बहुत सुंदर लग रही हो.

वो बोली- थैंक्स.

फिर कुछ टाइम सोच कर अपना एक पैर उसके मूढ़ा पर रख दिया और धीरे से उसकी गांड से पैर लगाया. उसने कुछ नहीं कहा, तो धीरे धीरे मेरी हिम्मत बढ़ी और अब मैं अपने पैर से उसकी गांड को अच्छे से सहलाने लगा.

उसने कुछ नहीं कहा, तब मैं उठा और जाने लगा. गेट पर जाकर मैंने मुड़ के उसे देखा, वो मेरी तरफ ही देख रही थी. उसका मुँह लाल हो चुका था और आँखें थोड़ी गीली दिख रही थीं. उसकी आँखें मानो मुझसे बोल रही थीं- मत जाओ आज.

मैं डरता हुआ वापस उसके सामने आया और उसको पकड़ कर उठाकर वक्रत ना गंवाते हुए अपने होंठ उसके गुलाबी होंठों पर रखकर किस करने लगा. वो भी मेरा साथ देने लगी.

ऐसे ही किस करते हुए मैंने उसे पीछे बेड पर लिटाया और किस करता रहा. उसके पैर बेड से नीचे लटके हुए थे और मैं उसके ऊपर किस करते हुए उस पर चढ़ा हुआ था. मैंने उसके 34" के मम्मों को अपने हाथ में ले लिए और किस करता रहा. मेरा लंड मेरा लोवर फाड़े दे रहा था.

पता नहीं ... कब तक मैं ऐसे ही पड़ा हुआ अपने लंड से उसकी चूत पर दबाव डालने लगा और जोर जोर से झटके मारने लगा. ज्योति की मादक सिसकारियां 'अह ... ओह ... हंह ...' निकल रही थीं.

उसके साथ इस प्रेमालाप में मेरा माल मेरे लोवर में ही निकल गया. तब मुझको होश आया और मैं वहां से उठकर अपने घर आ गया.

अगले दिन मुझको मां को लेकर मामा को जाना पड़ा क्योंकि नाना जी गुजर चुके थे. मामा को कोई लड़का नहीं था, तो मुझको काम करने के लिए कुछ दिन वहां रुकना पड़ा.

पर इधर जो आग मैं ज्योति में लगा के आया था. उस आग ने उसको रुकने नहीं दिया और वो मुझको कॉल करने लगी. फ़ोन से बात बढ़ने लगी. वो जब भी घर में अकेली होती, तो मुझे कॉल करती.

हमारी बातें सेक्स पर होने लगीं, मैं फोन पर उसको कसम देकर उसके कपड़े उतरवा देता. फिर उसकी और चुदाई के सपने दिखा कर मैं ऐसे तेरी चूत में लंड डालूंगा ... ऐसे किस करूंगा ... दूध दबाऊंगा निप्पल चूस लूंगा.

इन सब बातों से वो फ़ोन पर ही गर्म हो जाती और कहती- बस रवि अब घर आ जाओ ... अब तेरे बिना नहीं रहा जाता.

फिर चार दिन बाद उसने मुझे बताया कि घर वाले उसकी शादी पक्की कर आये हैं. तब मैं निराश हो गया और उसके घर वालों को गालियां देने लगा.

उसने कहा- रवि, अब आ ही जाओ प्लीज.

मैंने बताया कि अभी 5 दिन और लग रहे हैं ... फिर मैं आ जाऊंगा.

इस पर वो नाराज़ होकर बोली- अच्छा है तब तक खेती का काम बंद हो जाएगा, फिर मम्मी भी यहां ही रहेंगी.

यह सुन कर मैं और भी निराश हो गया.

फिर उसने खुद ही रास्ता बताया. वो बोली- रवि मैं मम्मी के कहने पर दूसरे मोहल्ले में सूट की सिलाई सीखने जाती हूं. जहां से होकर मैं जाती हूं, वहां बीच में गांव के बाहर एक खण्डहर है.

तब मुझको भी याद आया और मैं खुश हो गया क्योंकि उन खण्डहरों में बहुत चुदाई होती थी. गांव में सबसे ज्यादा उसी जगह पर लड़कियां चुदी होंगी.

इस तरह से हमारा मिलना तय हुआ. पांच दिन बाद इतवार को मैं घर आने वाला था और सोमवार को हम दोनों को मिलना था.

आज उससे काफी देर बात चली, मैं फ़ोन कट करने ही वाला था तभी ज्योति बोली- रवि एक बात बताओगे ?

मैंने कहा- हां पूछो.

ज्योति दबी आवाज में बोली- तुम्हारा वो कितना मोटा है ?

मैं मन ही मन खुश हुआ क्योंकि उसके ऐसे पूछने से ये पक्का हो गया था कि अब जब भी हम मिलेंगे, तो ये मेरा लंड अपनी चूत में लेना ही चाहेगी.

मैंने कहा- तेरे सरनाम चाचा के पैर के अंगूठे जितना मोटा होगा.

वो सरनाम चाचा के पैर का अंगूठा याद करके बोली- इत्ता मोटा ... नहीं ... नहीं ... मैं

कैसे ...

मैं बोला- हां ... कोई दिक्कत नहीं होगी ... मैं धीरे से करूँगा.

फिर ज्योति बोली- तो रवि, इतना मोटा अन्दर जाएगा कैसे ?

मैं बोला- जैसे तुम्हारी उंगली जाती है.

वो बोली- पर मेरी उंगली तो कम मोटी है.

“ठीक है ... आज दो उंगली डाल कर देखो.”

वो फोन चालू रखते हुए बोली- अभी देखती हूँ.

वो वाशरूम में गई और उसने अपने एक उंगली अपनी चूत में डाली और फ़ोन पर आवाज निकालने लगी.

“अअअह रवि ... अअअह ... अभी एक ही डाली है.”

मैंने कहा- ज्योति अब दूसरी उंगली भी आराम से डालो.

उसने दूसरी उंगली भी अपनी चूत में डाली.

अभी उसकी उंगली कुछ ही अन्दर गई होगी कि उसकी आवाज आने लगी- अअअह ...

नहीं जा रही बाबू ... दो नहीं जा रही हैं.

मेरे जोर देने पर उसने फिर से कोशिश की.

“अअअ अअ अअअअअ ... बस ...”

मैं बोला- क्या हुआ ... डालो ?

वो बोली- हो गया ... मेरा काम ... बस अब नहीं.

उसकी चूत ने पानी छोड़ दिया था. कुछ देर बाद मैंने भी अपना लंड हिलाया और सड़का मार कर मुठ निकाल लिया.

फिर कुछ दिन बाद मैं रविवार को गांव वापस आ गया. आते ही पहले उसके घर गया. वहां उसकी दादी थीं. मैंने दादी से नमस्ते की और अपने दोस्त के बारे में पूछा.

तो दादी ने कहा- बेटा वो शायद खेलने गया है.

मैं 'ठीक है ...' बोल कर जाने लगा.

तभी ज्योति अन्दर से आई और उसने कहा- भैया बहुत दिनों में आये हो.

मैंने कहा- हां बहना ... वहां काम ज्यादा था.

यह कह कर मैं जाने लगा.

ज्योति कुछ सोच कर बोली- रवि भैया फ्री हो क्या ? कुछ टाइम हो तो ऊपर वाले रूम से एक चारपाई उतारनी है. तुम्हारा दोस्त तो उतार के नहीं गया.

तभी दादी बोलीं- हां बेटा उतार दो ... उस चारपाई का अब वहां कोई काम नहीं है. सब नीचे सोते है ... गर्मियां ज्यादा हैं न.

बेचारी दादी को कहां पता था कि ये भाई बहन चुदाई के मूड में हैं.

मैं बोला- जरूर दादी मैं अभी उतार देता हूँ. चल बता ज्योति कहां है चारपाई ?

ज्योति आगे आगे चल दी, मैं उसके पीछे चल पड़ा. उसकी ठुमकती गांड मुझे मस्त किये दे रही थी. हम दोनों ऊपर वाले कमरे में आ गए, जहां बस चारपाई पड़ी थी. मैंने ज्योति को पीछे से ही अपनी बांहों में भर लिया और उसके चुचे पकड़ कर पीछे से ही मसलने लगा. उसकी गांड में अपने खड़े लंड से झटके मारने लगा.

ज्योति बोली- यार अभी रुक जाओ ... एक दिन की बात है. बस कल दिल भर के कर लेना. फिर मैंने उसे छोड़ दिया और आगे जाकर किस की.

उसने कहा- जल्दी से चारपाई उठाओ, वरना दादी शक करेंगी.

फिर मैंने उसे इसके लिए थैंक्स कहा, तो वो बोली- पागल हो ... इतने दिनों में आये हो ... ऐसे कैसे जाने देती.

मैंने चारपाई नीचे उतार कर दादी को राम राम की और अपने घर आ गया.

उस दिन बड़ी मुश्किल से रात हुई. रात हो गई, पर अब रात कट ही नहीं रही थी ... नींद



ही नहीं आ रही थी.

जैसे तैसे दिन हुआ. मैंने सुबह जल्दी नहा लिया और उसके फोन का इन्तजार करने लगा. पर वो कॉल ही ना कर रही थी. मैंने उसको याद कर करके अब तक दो बार मुठ मार चुका था. फिर जब दस बजे तक भी उसकी कॉल नहीं आई तो मैं छत पर आ गया, देखा तो वो भी नहा धो कर ब्लैक सूट में तैयार खड़ी थी. मैं उसको ब्लैक सूट में देख कर खुश हो गया, क्योंकि मुझको लड़की ब्लैक सूट में सबसे ज्यादा पसन्द आती है.

मैंने उसको इशारा किया कि टाइम देखा है ?

उसने इशारा किया- बस दो मिनट और.

पता नहीं कोई बात तो थी, जिस वजह से उसको देर हो रही थी, मैंने उसकी समस्या को समझते हुए इंतजार करना बेहतर समझा.

लगभग ग्यारह बजे मेरे दोस्त की बहन ज्योति का मैसेज आया कि मैं जा रही हूँ ... वापस एक बजे तक आ जाऊंगी, वहां ही मिलना.

दोस्तो, मैं उस जगह इस डर से 12:30 पर ही पहुंच गया कि कहीं वो मुझे न पाकर वापस ही ना लौट आए.

मैंने पहले उधर जाकर देखा, उस गली में कोई नहीं आता था. उन दिनों गर्मियां चल रही थीं और इस वक्त तक मौसम एकदम आग हो जाता था. इसलिए सब अपने घरों में थे.

मैंने वो जगह देखी, जहां हम दोनों मिलने वाले थे. वो छोटा सा खण्डहर था, जो पीछे से फूटा पड़ा था. मैंने सोचा कि वहां से डर था कि कोई देख न ले. मैंने इधर उधर देखा, आस पास सारे घर खाली थे ... सब अपने अपने घर वहां से छोड़ कर जा चुके थे और सभी घरों में ताला लगा था ... सब बंद पड़े थे.

मैंने ध्यान से देखा तो एक सामने वाले घर का ताला खुला था. मैं अन्दर गया देखा, उसमें रात के समय कोई सोता था. उधर एक चारपाई पड़ी थी और अन्दर रूम में एक संदूक था. मैंने मन बना लिया कि मैं अपनी जान ज्योति को पहली बार आज यहां ही चोदूंगा.

पूरा एक बज गया तब ज्योति आई और जो हम दोनों ने पहले से सोचा था, वो उसी खण्डहर में चली गई. मैंने उसे देख लिया तब भी मैंने उसे नहीं बुलाया. वो उल्टा मुझको वहां बुलाने लगी. मैं वहां गया और उसको बताया कि वहां सूने घर में ठीक रहेगा. वो मान गई और इधर उधर देख कर आ उसी सूने घर में आ गई.

बिना समय बर्बाद किये, मैं उसे अन्दर कमरे में ले गया, जहां संदूक रखा था. वो अन्दर आते ही पागलों की तरह मुझको किस करने लगी और मैंने उसकी सलवार और कच्छी उतार कर नीचे कर दी. फिर उसको संदूक पर बिठा दिया. इसके बाद मैंने अपने कपड़े उतारे और तना हुआ लंड उसकी चूत के सामने हिलाया. उसने भी चुदासी होकर टांगें जितनी फ़ैल सकती थीं, उतनी फ़ैला दीं. मैंने उसकी चूत पर लंड लगाया और पेलने की कोशिश की, जो नाकामयाब रही. क्योंकि उसने अपनी सलवार पूरी नहीं उतारी थी, जिसे कारण उसके पैर पूरे नहीं फ़ैल रहे थे. मैं उसके बीच में पूरा नहीं जा पा रहा था.

मैंने ज्योति को किस किया और उसको उठा कर बाहर चारपाई पर ले आया, जो बरामदे में पड़ी थी. इस घर की दीवारें ऊंची थीं, दीवार की तरफ चारपाई थी, जहां से हम दोनों किसी को नहीं दिख सकते थे.

मैं जैसे ही उसे बाहर लाया, मैं उसे देखता ही रह गया. अन्दर अंधेरा था तो तब कुछ नहीं दिखाई दिया था.

एकदम गोरी टांगों के बीच फूली हुई चूत साफ़ दिखने लगी थी, एक भी झांट नहीं थीं, चूत की फाकें एकदम चिपकी थीं, उसमें अन्दर कुछ नहीं दिख रहा था, चूत एकदम सील पैक बन्द थी. मैं ज्योति को बचपन से जानता था, उसका अब तक किसी के साथ कोई अफेयर

नहीं रहा था. वो अब तक अनचुदी थी.

मेरा मन उसको पूरी तरह नंगी करने का हुआ. मैंने उसकी सलवार और कच्छी पूरी उसके पैरों से उतारी, पैरों को किस किया. वो मुस्करा रही थी क्योंकि जितना ज्यादा मुझे उसकी चूत चोदने की पड़ी थी, उतना ही ज्यादा वो भी मुझसे चुदना चाहती थी.

मैंने उसका कमीज उतारा, समीज उतारी. अब वो ऐसी लग रही थी, जैसे संगमरमर की बनी कोई मूरत हो. भगवान कसम ... इतनी गोरी लड़की मैंने अब तक ना कभी चोदी थी और शायद चोद भी न पाऊंगा. उसके गोरे गोरे चुचे, उन पर भूरे भूरे रंग के निप्पल थे, बस मन कर रहा था कि अभी खा जाओ उनको.

मैं कुछ समय खड़ा होकर उसे बस देखता रहा.

वो कभी अपनी चुचियो को हाथों से छिपाती, कभी अपनी चूत को. फिर बोली- कुछ करना है या मैं जाऊं ?

मैं उसके पास गया और उसके हाथों को उसकी चुचियों से हटाकर अपने हाथों से पकड़ कर मुँह में लेकर बारी बारी से पीने लगा.

ज्योति सिसकारियां लेते हुए वो मेरे लंड को पकड़ कर बोली- रवि बस बस ... अब कुछ करो ... इसे डालो.

चारपाई पर पड़े कपड़ों पर मैंने उसे लेटाया और खुद ऊपर लेट कर हाथों से उसकी चुचियों को मसलता रहा और किस करता रहा.

ज्योति ने खुद अपने पैर मेरी कमर के ऊपर कर लिए और अपने चूतड़ उछाल कर मेरा लंड चूत में लेने की कोशिश करने लगी, जो अन्दर नहीं जा रहा था. मैं भी उसकी चूत पर लंड से झटके मार कर उसको तड़फा रहा था.

वो मचलने लगी, उसकी चूत गीली होने लगी और उसने खुद मेरा लंड अपने हाथ से पकड़ कर अपनी कुंवारी चूत में सैट किया. मैंने भी लंड को छोड़ दिया.

मेरे लंड का टोपा ही उसकी चूत में अन्दर गया था कि वो उछल कर मेरे नीचे से निकल गई और दीवार के पास जाकर खड़ी हो गई. उसने दोनों हाथों से अपनी चूत छिपा ली. उसकी आंखों में हल्के हल्के आंसू थे और चेहरे पर दर्द का अहसास था.

मैं उसके पास गया और उसे गले से लगाकर किस किया.

मैंने कहा- क्या हुआ ?

वो बोली- फट गई है मेरी ... अब नहीं कर सकती प्लीज चलो.

मैंने कहा- ठीक है ... पर क्या एक बार दिखाओगी ?

मैंने घुटनों के बल बैठ कर उसके हाथ चूत से हटाए और देख कर कहा- कुछ नहीं हुआ बाबू देखो.

उसने नीचे मुँह कर के देखा और बोली- पर इसमें दर्द अब भी हो रहा है.

मैंने प्यार से हाथ फेरा, तो लंड की बार बार मार से ज्योति की चूत गोरी से गुलाबी हो गयी थी. मैंने कभी किसी लड़की की चूत नहीं चाटी, पर उसको देख कर नहीं रह सका और मुँह लगा दिया ज्योति की चूत पर ... अपनी जीभ चुत की दरार में डाल कर ऊपर नीचे करने लगा.

ज्योति ने मेरे बाल पकड़ लिए और मेरा मुँह अपनी चूत पर दबाने लगी 'अअअह ...

उम्ह ... अहह ... हय ... याह ... अहअह ...'

कुछ समय ऐसा करने के बाद वो बोली- रवि बस बस ...

मुझको लगा ये झड़ जाएगी, मैंने मुँह हटाया और खड़े होकर ज्योति को गले से लगा लिया. उसने मुझको कसके पकड़ लिया- आई लव यू बाबू.

मैंने उसके कान में कहा- ज्योति जी एक बार और कोशिश करोगी ?

वो बोली- ठीक है.

मैंने फिर लिटाया, उसकी चूत पर लंड रखा. उसकी कमर को कस के पकड़ा ताकि इस बार फिर भाग ना जाए. अब मैंने अपनी पूरी ताकत से लंड की चोट मारी और ज्योति की चूत में पूरा लंड एक बार में ही उतार दिया.

वो चिल्लाने की आवाज करती, उससे पहले उसका मुँह अपने मुँह से बंद कर दिया. वो मेरे नीचे बिलबिलाई, अपने पैर फटकारते हुए इधर उधर फेंकने लगी, उसकी आंखों में आँसू आ गए थे. वो दर्द से मेरे होंठों को खा चुकी थी.

मैं पूरा लंड पेलने के बाद दो मिनट रुक गया. जब वो कुछ शांत हुई, तब मैं धीरे धीरे आगे पीछे होने लगा. दर्द तो था, पर उसको भी शायद मजा आने लगा था. इसका पता मुझको तब चला, जब उसके पैर मेरी कमर के ऊपर आ गए और वो मुझको किस किए जा रही थी.

मैं उसको चूमा तो बोली- और जोर लगाओ मेरे पहलवान राजा ...

वो मुझको पहलवान इसलिए बोली क्योंकि मैं शरीर से ठीक ठाक हूँ और उसी तरह का मेरा लंड है.

अब मैं ज्योति को दबा कर चोदता गया. मेरे हर झटके पर उसका सारा बदन हिलता था, जिसे मुझको और जोश आ जाता था. फ्रंटियर मेल की तरह धकापेल चुदाई की ट्रेन दौड़ी जा रही थी.

ज्योति भी अब कामवासना से जोश में आकर बोल रही थी- हम्मम्म अअअअअ ... चोद मुझको ... चोद फाड़ डाल अपने दोस्त बहन की चूत ...

मैं भी उसको बेरहम बनकर चोदता गया.

कुछ देर बाद ज्योति अपने शरीर को ऐंठते हुए बोली- मेरा होने वाला है राजा ... आह ...

मैं गई ...

यह बोल कर वो झड़ने लगी.

मेरा भी होने को था, मेरी भी आवाज निकली- और ले भोसड़ी की ... ले ... साली ...

यह बोल कर गपागप लंड उसकी चूत मैं पेलता रहा और बस- अअअअअ अअअअअ ये ले मेरी जान ... ये ले पानी पी.

इसके बाद मेरा भी हो चुका था. हमने कपड़े पहने, उसके खून को मैंने अपनी बनियान से साफ किया और उसे ही अपनी चूत में लगा कर वो घर चली गयी.

उसके जाने के दस मिनट बाद में गया.

उस दिन के बाद से उसे चोदने का कभी मौका नहीं मिला. क्योंकि उसकी शादी तय हो चुकी थी. आज वो शादीशुदा है और खुश है. उसकी दो औलादें भी पैदा हो गई हैं, एक लड़का, एक लड़की है.

दोस्तो, मेरी सच्ची कहानी कसी लगी जरूर लिखना.

आपका रवि

ravikhana 821@gmail.com

## Other stories you may be interested in

### वासना का मस्त खेल-1

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम महेश कुमार है. अभी तक आपने मेरी कहानियों में मेरे बारे में जान ही लिया होगा. सबसे पहले तो मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मेरी सभी कहानियाँ काल्पनिक हैं, जिनका किसी के साथ कोई भी [...]

[Full Story >>>](#)

### दुल्हन भाभी के साथ लेस्बियन सेक्स

दोस्तो, मेरा नाम निशा है। मैं 40 साल की हूँ, मेरा फिगर 38सी 36 40 है और मैं दिखने में बहुत ही हॉट और सेक्सी हूँ। आप लोगों ने मेरी पिछली कहानियों को पढ़ा, काफी सराहा और काफी कमेंट भी [...]

[Full Story >>>](#)

### मेरी रानी की कहानी-2

हमारे बीच चुम्बन का सिलसिला आम हो गया था। जब भी हम फ्री होते, हमें एकांत मिलता हमारे हॉट आपस में जुड़ जाते। ऐसा कई दिन चला। हमारी प्यास बढ़ने लगी थी। अब तक रानी की भी फाइनल ईयर कम्प्लीट [...]

[Full Story >>>](#)

### जंगल सेक्स : कामुकता की इन्तेहा-12

मैं जट्टी हूँ तो मैंने खुल कर ढिल्लों के बराबर पेग लगाए। आधे पौने घंटे बाद दारू ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया और घंटा पहले ज़बरदस्त तरीके से चुदी हुई मैं अब अपने जिस्म का कंट्रोल खोने लगी। [...]

[Full Story >>>](#)

### कॉलेज में मिला टीचर का बड़ा लंड

दोस्तो, मेरा नाम रोहन है और काफी टाइम से मैं सेक्स कहानियाँ पढ़ता आ रहा हूँ. इन सेक्स कहानियों को पढ़ने में मुझे बहुत मज़ा आता है. मेरी उम्र अब 22 साल की हो चुकी है, औसत दुबला सा शरीर [...]

[Full Story >>>](#)

